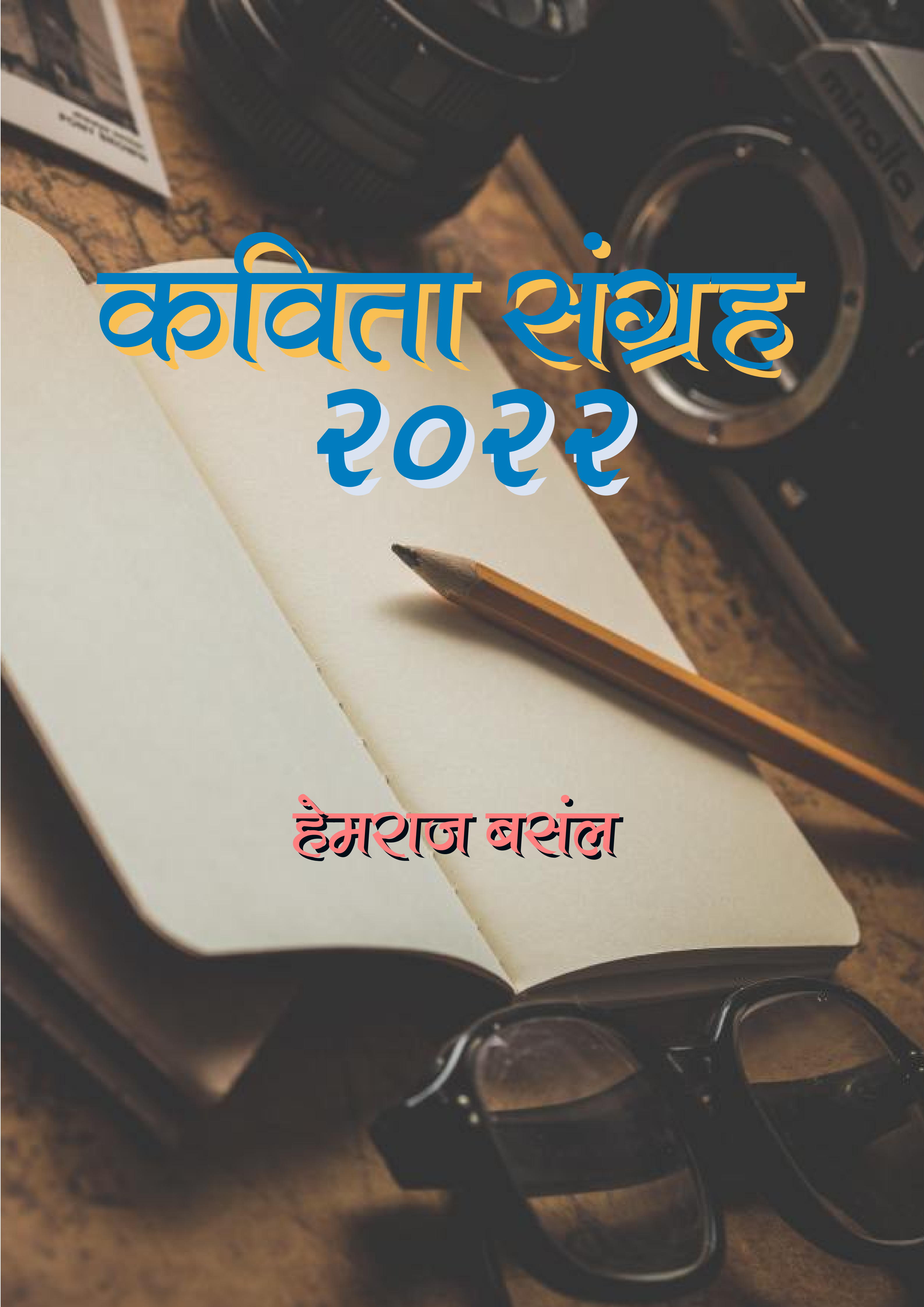

कविता संग्रह
२०२२

हेमराज बसंल

कोरोना को फटकारती (धुन-आरती)

जा जा कोरोना प्रेता।
मर मर कोरोना प्रेता।
कोविड उन्नीस नाम
घोर यातना देता। जा जा
चीन देश में जन्मा
दुनिया को थर्राया।
वुहान से अमेरिका
धुप्प अंधेरा छाया। जा जा
तेरा है तेरा है
दबंग दोष लगाये।
स्वास्थ्य संघ विश्व का
कुछ तय ना कर पाये। मर मर
हाथ जोड़ना सीखे
हाथ मिलाना भूले।
घुटनों पर आज गिरे
रहते फूले फूले। मर मर
तुम जिधर दृष्टि डालो
मरघट वह बन जाता
दूर दूर सब रहते
झूठा रिश्ता नाता।
जा जा कोरोना प्रेता।
तालाबन्दी कर के
मुँह पट्टी ढक के
मानव जीवन बन्दी
प्रतिपल मर मर के। जा जा
फोड़ा मस्सा कन्दुक
तेरा रूप डराये
साबुन से धो कर कर
मानव तुझे भगाए। मर मर
सारी दुनियाँ पीड़ित
कौन देश है छूटा?
प्रभो आप ताले में
भक्तों का दिल टूटा।
सारा संसार दुखी
आया उसके घर पर।
रब का भी द्वार बन्द
चमगादड़ से डर कर।
संक्रमित अनजाने में
पता नहीं चल पाता।
घर में रहो सुरक्षित
तू क्यूँ बाहर जाता। जा जा
विज्ञानं वैद्य श्रम से
बंसल हम जीतेंगे।
दानव तुम हारोगे
(दानव तुम भागोगे)
मानव यहीं रहेगे।
जा जा कोरोना प्रेता।

कोरोना रोग का आना

कोरोना रोग का आना,
छूटा अब जीमने जाना।
बुलावे भी कम ही आते,
सौ की गिनती बतलाते।
स्वयम् ही आना कह जाते,
अब कहां बतियाना खाना।
कोरोना रोग का आना।
छूटा अब जीमने जाना।
कई सावधानी बताते,
सेनेटाइजर मलवाते,
साबुन से हाथ धुलाते,
मास्क लगा कैसे खाना?
कोरोना रोग का आना।
छूटा अब जीमने जाना।
हाथ मिलाना अब छूटा,
रिश्ता कईयों से टूटा,
अपनों से अपना रूठा,
दो गज की दूरी बनाना,
कोरोना रोग का आना।
छूटा अब जीमने जाना।
स्टाल इतने कम लगवाते,
पकवान कुछ ही मिल पाते,
और जल्दी जल्दी खाते,
समय पर ही बाहर जाना,
कोरोना रोग का आना।
छूटा अब जीमने जाना।
उपहार पूरा ले जाते।
इक अकेले भोजन पाते।
बेमन आशीष दे आते।
घर पत्नी मारती ताना,
कोरोना रोग का आना।
छूटा अब जीमने जाना।
न रोटी पर लाइन लगना
न पताशी भीड़ में घुसना
न पेपरडोसे को तरसना
गरमा गरम जलेबी पाना।
कोरोना रोग का आना।
छूटा अब जीमने जाना।
वह कहे टिप्पन ले जाना
मेरे लिये भोजन लाना

जब दे रहे हो नजराना
तो फिर काहे को शर्माना
कोरोना रोग का आना।
छूटा अब जीमने जाना।
चुनावी रैली करवाते
धरना प्रदर्शन पर जाते
तब क्यों नहीं सौ गिन पाते।
जोर जनता पर अजमाना।
कोरोना रोग का आना।
छूटा अब जीमने जाना।
छूटा अब जीमने जाना।

झूठ

झूठ ही लिखने वाले, झूठ ही पढने वाले
दरबार में बैठे सब, झूठ ही सुनने वाले।

झूठ ही यहां सज रहा, झूठ ही यहां बज रहा।
ऊपर चढ़ गए झूठे को सही कहने वाले।
झूठराज का नंगा नाच, झूठों के ही होते काज
शाही आंखों में बैठे, दांव पेंच चलने वाले।

झूठ का बोलबाला, झूठे का पो बारा।
खास हो गए चाटुकारिता करने वाले।

झूठ बहुत तेज दौड़े, सत्य को पीछे छोड़े।
सच को डंडे मारते, रेवड़ हांकने वाले।

झूठ उभारा जाता, सत्य दबाया जाता।
जनता को ठग रहे, आंकडे गढ़ने वाले।

मेरे आंगन आए बादल

गरड़ गरड़ गड़ बदरा गरजे।
टपक टपक टप पानी बरसे।
उमड़ उमड़ कर झूम झूम कर,
चमक दमक कर घूम घूम कर,
मेरे आंगन आए बादल।
इक दल बनकर छाए बादल।

तपन उमस जब सता रही थी
प्यासी धरती बुला रही थी
काली काली घटा देख कर,
नाचे मयूर मन उमंग भर,
मेरे आंगन आए बादल
इक दल बनकर छाए बादल।

आस राम ने पूरी की है
विनय हमारी सुन ही ली है।
चिरैया झुंड चहक चहक कर
उपवन गुलाब महक महक कर
मेरे आंगन आए बादल
इक दल बनकर छाए बादल।

कोयल कू कू बोल बुलाती
काली नागिन भी बल खाती
संध्या पंछी गाना गाकर
ऊंची उड़ान बाज दिखा कर
मेरे आंगन आए बादल।
इक दल बनकर छाए बादल।

झोली धरती की भर दी है
कलुषिता सब अब धुल गई है
उपवन झरन झरे झर झर झर
दादुर ताल टर्राय टर टर ।
मेरे आंगन आए बादल।
इक दल बनकर छाए बादल।

स्वागत पुलक पुलक मन करता
प्रेम हर्ष उमड़ उमड़ पडता
आए मेहमान शुभ हितकर
सागर से लाए जल भरकर

मेरे आंगन आए बादल
इक दल बनकर छाए बादल।

भुजिया खाने को मन करता
बिन अचार पेट नही भरता
साथी संगी संग नच गाकर
गोठ मनाए बगिया जाकर।
मेरे आंगन आए बादल
इक दल बनकर छाए बादल।

छप छप पानी उछाल उछाल
मेघ मल्हार बजा कर ताल
कागज वाली नाव बहा कर
हर्षित जल में नहा नहा कर।
मेरे आंगन आए बादल
इक दल बनकर छाए बादल।

रिमझिम रिमझिम बदरा बरसे
झिलमिल झिलमिल बिजुरी चमके
खेले बाल कीच में सनकर।
छुप जाती बाला डर डर कर।
मेरे आंगन आए बादल
इक दल बनकर छाए बादल।

बाल गीत

गर्मी

गर्मी आई गर्मी बहे पसीना,
चौन हमारा सूरज छीना
पंखा कूलर की हुई सफाई,
महीना मई जून जुलाई।
धूल भरी आंधी आती,
बिजली झट गायब हो जाती
नीम के नीचे सोते दादा,
हमें सुलाते छत पर ज्यादा
पोस्ते की खीर बनाई,
ऊँगली चाट चाट कर खाई
पना खरबूजे का भाता,
आछ आमरस बहुत सुहाता
पापा तरबूज लेकर आते,
बच्चे तो बस कुल्फी खाते।
पापा ठंडाई घुटवाते,
हम लिम्का चट कर जाते
बरफ का गोला नीबू वाला,
बार बार उसमें शरबत डाला
गर्मी जब जब भी आती,
स्कूल से छुट्टी मिल जाती
फिर नाना के घर जायेंगे,
तालाब में खूब नहायेंगे।
रोटी चावल पापड़ अचार,
नानी करती खूब मनुहार।
मजा तो बगीचे में आता,
पत्थर मार कर आम गिराता।
शहतूत करोंदा लगता अच्छा,
नमक लगा खाएं आम कच्चा।
देना नहीं इनका कोई दाम,
पर बेर तोडना मुश्किल काम।

सर्दी

सर्दी आई
टोपा जर्सी और रजाई।।
सर्दी आई, सर्दी आई।
सुबह उठने में जान निकलती,
नहाने के नाम नानी मरती।
स्कूल जाना फिर भी भाता,
मजा खूब खेलने में आता।
धुप प्यारी सुहानी लगती,
क्यों जल्दी शाम यह ढलती?
पुये पकौड़ी नित बनते,
लड्डू हलवा खाने को मिलते
रबड़ी पैड़ा दूध मलाई,
सर्दी आई सर्दी आई।

बादल बन जाऊँ

बादल बन जाऊँ
मै बादल बन जाऊँ,
सागर से जल लाऊँ।
खेतों में बरसाऊँ ,
मै बादल बन जाऊँ।
किसानों की मै आस बनूं,
पशुओं के लिये घास बनूं।
बांध तलैया भर पाऊँ।
मै बादल बन जाऊं।
धरती रहे हरी भरी,
बगिया रहे खिली खिली।
मोरों को मै नचवाऊँ,
मै बादल बन जाऊँ।
छप छप करते बच्चे देखूँ,
कागज की कश्ती चलते देखूँ।
जन जन के मन को हरसाऊँ,
मै बादल बन जाऊँ।

अक्ष

अक्ष है नटखट बेटा,
मुंह फुला कर बैठा,
पापा ने डान्ट दिया तो,
मिटटी में जा लेटा।
अक्ष है नटखट बेटा।
दूध पीने मेँ निकले जान,
रोटी खिलाना मुश्किल काम,
होमवर्क कराने में मम्मी हो जाती परेशान।
ड्रेस पहनना नही आता,
रोता रोता स्कुल जाता।
मांगे भिन्डी की भाजी,
कुछ और न इसको भाता।
मोबाइल मे गेम खेलता,
टीवी में कार्टून देखता।
बाबा ने रिमोट लिया तो ,
घर का सामान फेंकता।
बैग लेकर स्कूल जाता,
बोतल में पानी ले जाता।
लन्च ब्रेक में खोल टिफ़िन,
अचार परांठे खाता।

खरगोश

लम्बे कानों वाला,
रुई से बाल वाला,
बरफी जैसा सफेद,
खरगोश हमने पाला।
सहलाने में उसे,
मजा बहुत ही आता।
गोद में उठायें तो,
नाखून चुभा जाता ।
बार बार सू सू या
पोटी करने वाला,
खरगोश हमने पाला।
हमारे घर में आया,
प्यारा सा मेहमान।
अक्ष बेटे ने रखा,
है बनी इसका नाम।
ठण्डी लग जाये तो,
छ छ छींकनेवाला,
खरगोश हमने पाला।
हरी घास सब्जी फल,
बड़े चाव से खाता।
चूहे से डरकर ही,
कोने में घुस जाता।
फुदक फुदक कर चल चल,
दौड़ जीतने वाला,
खरगोश हमने पाला।

कोरोना

कोरोना रोग का आना
छूटा मेरा स्कूल जाना
पापाजी घर पर बैठे
या आंख मूंद कर लेटे।
नही आती सब्जी मिठाई
नमक आचार से रोटी खाई।
नही मांगू खेल खिलौना
उदास घर का हर कौना।
घर में फूट रही रुलाई
बाहर पुलिस करे पिटाई।
भगवान ने कुछ न छोड़ा
मम्मी ने गुल्लक तोड़ा।
पैसे कहां से आयेंगे,
राम अब हम क्या खाएंगे।
अब हम कैसे जी पाएंगे।
बार बार गुस्सा होते,
पापा मन ही मन रोते।
उस दिन ही पेट भर पाता
लंगर से जब खाना आता।
खेल खेल में हम झगड़ते
अम्मा बापू क्यों लड़ते।
पापा ने कभी नहीं डांटा
आज क्यूं मार दिया चांटा।
मोटर रेल सब बंद हुए,
कैसे होगा गांव जाना।
कब जायेगा क्या ठिकाना
कोरोना रोग का आना
छूटा मेरा स्कूल जाना

पकौडी

सर्दी में झट पच जाती,
बरसात में ललचाती।
भोजन की शान बढाती,
सब जगह मिल जाती।
इसे बनाना है आसान,
बस थोड़ा सा सामान।
सस्ता और अच्छा जान,
हो आगत का सम्मान।
सहस या चटनी संग खाओ,
तीखी या मीठी बनवाओ,
चाहे सब्जी डलवाओ।
संग पुये भी तल लाओ।
मटर पनीर प्याज बेसन
नमक मिर्ची गर्म मसाला।
अजवायन हींग संग,
अदरक कूट कर डाला।
गोभी या मिर्ची के,
आलू ब्रेड या बैंगन हो।
पालक धनिया पुदीना
बस मसालों में दम हो।
बनाने वाले थक जाते,
खाने वाले नहीं अघाते।
नहीं नहीं कर चट कर जाते,
प्लेटें खाली कर जाते।
मोदीजी का कथन सच्चा,
ठेला पकोड़ी का अच्छा।
खाये जिसे बूढ़ा बच्चा,
राम पूरी करता इच्छा।
माँ कभी आलस करती,
तवा नही कड़ाही चढ़ती।
गली में महक गमकती,
सूंघ पड़ोसन आ धमकती,
खाती और प्रशंसा करती।

दादाजी

पापा के पापा को कहते हम दादाजी।
हमारे साथ ही रहते दादी दादाजी।
दाल-रोटी, हलुआ-पुड़ी में ही खुश रहते,
इडली-डोसा से मुँह बिचकाते दादाजी।
कोई वस्तु बेकार नहीं है संसार मे,
हर चीज का उपयोग बतलाते दादाजी।
पंखा कूलर में व्यर्थ बिजली जलती देख,
झल्लाकर बटन बन्द कर जाते दादाजी।
मै अंग्रेजी कान्वेंट स्कूल पढ़ने जाता,
हिंदी-हाडौती में बतियाते दादाजी।
सिक्सटी नाईन को ही उनहत्तर कहते,
बार बार हमको यह रटवाते दादाजी।
पापा मम्मी बाईक से बाजार जाते,
साइकिल से घुमाने ले जाते दादाजी।
सत्य अहिंसा में गांधीजी के अनुयायी,
असत्य पर दस बैठक लगवाते दादाजी।
मोबाइल टीवी से हमे जबरन छुड़ाकर,
गीता या रामायण पढ़वाते दादाजी।
रामायण महाभारत कभी नही चूकते,
समाचार टीवी पर चलवाते दादाजी।
कोई किताब अखबार घर मे अगर आता,
सबसे पहले पूरा पढ़ जाते दादाजी।
मम्मी नाराज हो कभी मारने दौड़ती
गोद मे बिठाकर हमे बचाते दादाजी।
पापा मम्मी को गलती का भान कराते
ना माने तो अनशन कर जाते दादाजी।

रोटी

मोटी या पतली, बड़ी हो या छोटी।
जीवन की पहली जरूरत हैं रोटी।
चाहे पकवान कितने ही मिल जाए,
रोटी के बिना पेट नहीं भर पाये।
बाबा की छः रोटी, पापा खाय चार;
दो रोटी खिलाती माँ डांट फटकार।
पापा दौड़े नित रोटी कमाने में।
माँ उलझी रहती रोटी बनाने में।
माँ चांद जैसी गोल रोटी बनाती,
मुझ से भारत के मेप सी बन पाती।
ज्वार, बाजरा और मक्का कढी संग
रोटी लगती सर्दी में जैसे व्यंजन।
तंदुरी, टिक्कड़, रुमाली, फुल्का, नान;
नया रूप, नया स्वाद व कई पहचान।
रोटी की महिमा जगत में न्यारी है।
इंसान को रोटी सबसे प्यारी है।
बूफे डिनर में खाना खाने जाते।
रोटी बहुत मुश्क़िल से ही ले पाते।
रोटी मिले तो कभी मना मत करना,
रोटी का मान सर आंखों पर धरना। जे
लाक डाउन के बाद सुधरे कुछ हाल,
कह बंसल चल रही रोटी और दाल।